हिन्दी साप्ताहिक

Title Code:- UTTBIL00534

उत्तराखण्ड अभ्युदय

♦वर्ष -01 ♦ अंक-48 ♦देहरादून - रविवार 12 अक्टूबर 2025 ♦पृष्ठ : 4 ♦मूल्य: 1/-

सभी साक्ष्य, सुझाव के साथ निष्पक्षता और पारदर्शिता से होगी जांच: अध्यक्ष आयोग

देहरादून। उत्तराखंड अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की विगत 21 सितंबर,2025 को हुई प्रतियोगी परीक्षा में कथित गड़बड़ियों की जांच को लेकर राज्य सरकार द्वारा न्यायमूर्ति (सेवानिवृत्त) यूसी. ध्यानी की अध्यक्षता में गठित एकल सदस्यीय जांच आयोग ने बुधवार को जनपद देहरादून के सर्वे चौक स्थित अनुसंधान एवं विकास प्रौद्योगिकी संस्थान (आईटीडीए) ऑडिटोरियम में लोक सुनवाई एवं जनसंवाद कार्यक्रम आयोजित किया। जिसमें प्रतियोगी परीक्षा में सम्मिलित अभ्यर्थियों, परीक्षा केंद्र प्रभारी, कोचिंग सेंटर संचालक और आम नागरिकों ने अपनी बात और सुझाव रखे। एकल सदस्यीय जांच आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति यूसी ध्यानी ने स्पष्ट किया कि जांच कार्य पूरी तरह निष्पक्ष, पारदर्शी और तथ्य एवं साक्ष्यों पर आधारित होगी। उन्होंने कहा कि आयोग विभिन्न जिलों में जाकर जनता से सीधा संवाद कर रहा है। जन सुनवाई में जो भी सुझाव एवं साक्ष्य मिल रहे है, उनको संकलित किया जा रहा है, ताकि निष्पक्ष व पारदर्शिता के साथ अंतिम रिपोर्ट तैयार कर शासन को भेजी जा सके।

जनसुनवाई में मौजूद अभ्यर्थियों ने अपने विचार आयोग के समक्ष रखते हुए प्रतियोगी परीक्षा की निष्पक्षता से जांच करने और भविष्य में होने वाली परीक्षाओं में सुरक्षा व्यवस्थाओं को सुदृढ़ किए जाने पर जोर दिया। इस दौरान अभ्यर्थियों ने अपने महत्वपूर्ण सुझाव रखे। आयोग ने एक–एक कर सभी अभ्यर्थियों की बात सुनी और उनके सुझाव लिए।

जांच आयोग के सचिव विक्रम सिंह राणा ने कहा कि जनसुनवाई में मिली शिकायतों और सुझावों को संकलित करते हुए विस्तृत रिपोर्ट शासन को भेजी जाएगी। उन्होंने कहा कि कोई भी व्यक्ति इस संबंध में जांच आयोग की ईमेल के माध्यम से भी जानकारी उपलब्ध करा सकता है। जन सुनवाई के दौरान अपर जिलाधिकारी (वि.रा.) केके मिश्रा, मुख्य शिक्षा अधिकारी वीके ढ़ौडियाल, विगत संपन्न परीक्षा केंद्रों के प्रधानाचार्य, प्रभारी, व्यवस्थापक, अभ्यर्थी एवं आम नागरिक मौजूद थे।

सरकार आपदा प्रभावित क्षेत्रों में राहत, पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण के कर रही कार्य

देहरादून। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी से बुधवार को नई दिल्ली में लार्सन एंड टुब्रो के प्रतिनिधिमंडल ने शिष्टाचार भेंट की। इस अवसर पर प्रतिनिधिमंडल ने प्रदेश में हाल ही में हुई प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित लोगों की सहायता एवं राहत–पुनर्वास कार्यों में सहयोग हेतु ध्5 करोड़ (पांच करोड़ रुपये) की सहायता राशि मुख्यमंत्री राहत कोष में प्रदान की।

मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी ने एलएंडटी के इस सराहनीय सहयोग के लिए कंपनी के प्रतिनिधियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि संकट की घड़ी में कॉर्पोरेट सेक्टर का यह योगदान राज्य सरकार के लिए बड़ी सहायता साबित होगा। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार लगातार आपदा प्रभावित क्षेत्रों में राहत, पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण के कार्यों को प्राथमिकता के साथ कर रही है। ऐसे में निजी क्षेत्र की सहभागिता से इन कार्यों में और तेजी आएगी तथा प्रभावित लोगों को शीघ्र राहत पहुंचाई जा सकेगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि उत्तराखंड एक आपदा संवेदनशील राज्य है, जहां भौगोलिक परिस्थितियों के कारण समय–समय पर प्राकृतिक आपदाओं का सामना करना पड़ता है। राज्य सरकार ने आपदा प्रबंधन को सुदृढ़ बनाने और राहत तंत्र को और अधिक सक्षम करने के लिए कई ठोस कदम उठाए हैं। इस अवसर पर एल.एंड.टी. समूह के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

दून में बच्चों को कृमि मुक्ति दवाई खिलाई

संवाददाता देहरादून। बुधवार को राष्ट्रीय कृमि मुक्ति दिवस का शुभारंभ श्री गुरु नानक दून वेल स्कूल रेस कोर्स में किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ मनोज कुमार शर्मा द्वारा किया गया। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों को शारीरिक स्वच्छता के बारे में जानकारी दी तथा एल्बेंडाजोल की दवा खिलाई। बताया कि जिन्हें आठ अक्टूबर को दवा नहीं खिलाई जा सकी। वह 15 अक्टूबर को खिलाई जाएगी। एक से 19 साल के 676809 बच्चों को यह दवा खिलाई जाएगी। इस मौके पर स्कूल की प्रधानाचार्य हरविंदर कौर बजाज, अपर मुख्य चिकित्सा अधिकारी एन एच एम डॉ निधि रावत सहित आर बी एस के, आर के एस के, आई ई सी प्रकोष्ठ की टीम मौजूद रही।

मसूरी प्रभारी निरीक्षक देवेंद्र सिंह चौहान ने चार्ज लिया

संवाददाता देहरादून। नव नियुक्त कोतवाल देवेंद्र सिंह चौहान ने मसूरी कोतवाली का कार्य ग्रहण करने के बाद पुलिस अधिकारियों व कर्मचारियों की बैठक ली व जरूरी निर्देश दिए। बैठक के दौरान प्रभारी निरीक्षक ने सभी को अनुशासन, कर्तव्यनिष्ठा, तथा जनता के प्रति सौहार्दपूर्ण व्यवहार बनाए रखने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी अधिकारियों व कर्मचारियों को सोशल मीडिया प्लेटफार्म्स पर अनावश्यक टिप्पणी या पोस्ट करने से परहेज करने, वर्दी को सदैव साफ–सुथरी एवं व्यवस्थित रूप से धारण करने के निर्देश दिए ताकि पुलिस विभाग की गरिमा एवं छवि बनी रहे। उन्होंने थाना अथवा चौकी पर आने वाले प्रत्येक व्यक्ति की शिकायत को धैर्यपूर्वक सुनकर उसका समयबद्ध एवं न्यायोचित निस्तारण सुनिश्चित करने पर विशेष बल दिया।

सड़क मार्ग नहीं होने से ग्रामीण हो रहे हैं परेशान

संवाददाता सतपुली। नगर पंचायत सतपुली के मल्ली सतपुली का संपर्क सड़क मार्ग एनएच निर्माण कार्य के दौरान क्षतिग्रस्त हो गया है। जिससे ग्रामीणों को परेशान का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि पहले ही बारिश से भूमि धंसाव हो गया था। इसके बाद एनएच के सड़क निर्माण कार्य के दौरान सड़क के किनारे खुदाई की गई जिससे गांव की सड़क क्षतिग्रस्त हो गई है। गांव को आवागमन करने को अन्य कोई मार्ग नही है। सड़क धंसने का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। बारिश शुरू होने के बाद से ही मल्ली सतपुली तिराहे की स्थिति बिगड़ने लगी थी। दो दिन लगातार हुई भारी बारिश से सड़क पर गड्ढे बनने शुरू हो गए थे। सड़क पर हुआ गड्ढा पूरा खोखला नजर आ रहा है जिससे लोनिवि पर सवाल कई सवाल खड़े किए जा रहे हैं। तिराहे के पास की सड़क 100 मीटर धंस गई। सड़क के बीचो–बीच कई दरारें व आ चुकी है। साथ ही सड़क कई जगह से पूरी क्षतिग्रस्त हो गयी है।

सम्पादकीय

संकल्प से संवृद्धि की ओर

देवभूमि:शुभां वर्धयति ग्राम्यजीवनसमृद्धये।
कुटीरे उद्योगा:स्फुरन्ति, अन्नसंस्कारणं च शोभते।।
पर्यटनं पुष्यति सौख्यहेतुं, जनकल्याणविवृद्धये।
नवोन्मेषप्रेरिता आत्मनिर्भरता प्राप्नुयात्।।

अर्थात

देवभूमि उत्तराखंड अपने ग्राम्य जीवन की समृद्धि बढ़ा रही है,कुटीर उद्योग और खाद्य प्रसंस्करण क्षेत्र को चमकाने का प्रयास है।पर्यटन जनकल्याण के लिए उन्नति पा रहा है,नवाचार से प्रेरित होकर यह प्रदेश आत्मनिर्भर बन रहा है।

'स्टार्टअप इंडिया', 'वोकल फॉर लोकल', 'मेक इन इंडिया','स्किल इंडिया' और 'डिजिटल इंडिया' जैसी पहलों से आत्मनिर्भरता की ओर अग्रसर हैं।

उद्योगों की लाइसेंसिंग प्रोसेस को आसान करते हुए सिंगल विंडो सिस्टम की व्यवस्था में सुधार किया, वहीं औद्योगिक नीति, लॉजिस्टिक नीति, स्टार्टअप नीति और डैडम नीति से राज्य में उद्योगों को बेहतर माहौल उपलब्ध कराने का प्रयास किया गया है। निवेश प्रोत्साहन के लिये यूके-स्पाईस नाम से निवेश प्रोत्साहन एजेंसी स्थापित कर निवेशकों को समर्पित "निवेश मित्र" की सुविधा उपलब्ध कराई जा रही है। 'एक जनपद, दो उत्पाद' योजना के माध्यम से हमने स्थानीय आजीविका के अवसरों को बढ़ावा दिया है, जबकि 'हाउस ऑफ हिमालयाज' ब्रांड ने हमारे स्थानीय उत्पादों को व्यापक पहचान दिलाने का काम किया है। इसके अलावा, 'स्टेट मिलेट मिशन', 'फार्म मशीनरी बैंक', 'एप्पल मिशन', 'नई पर्यटन नीति', 'नई फिल्म नीति', 'होम स्टे','वेड इन उत्तराखंड' 'सौर स्वरोजगार योजना' जैसी योजनाओं के माध्यम से स्थानीय अर्थव्यवस्था को मजबूत कर रहे हैं।

"स्वदेशी अपनाओ देश को मजबूत बनाओ'' के मंत्र को आत्मसात करना है।यदि हम स्वदेशी वस्तुओं को प्राथमिकता देंगे,तो हमारा ये कदम न केवल हमारे कारीगरों,किसानों और उद्यमियों को सशक्त बनाएगा,बल्कि आत्मनिर्भरता की संकल्पना को भी मजबूती प्रदान करेगा।

जय देवभूमि उत्तराखंड!! जय भारत!!

डॉ गार्गी मिश्रा

ममता का यह कैसा मॉडल!

बीरभूम जिले से रामपुरहाट में दो बच्चों सहित 10 लोगों को जिंदा जलाने की घटना ममता राज की प्रतिनिधि घटना की तरह आज देश के सामने है। तृणमूल कांग्रेस के एक स्थानीय नेता भादू शेख की हत्या का बदला लेने के लिए इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया। लोगों को घरों में बंद कर आग लगा दी गई। यह भयावह घटना है। बीरभूम के रामपुरहाट में हुई हिंसा उसी यथास्थितिवादी राजन. ीति की अंत परिणति है। बच्चों सहित 10 बेकसूर लोगों को जिंदा जला देने की यह घटना ममता की अखिल भारतीय महात्वाकांक्षा की भ्रूण हत्या साबित हो सकती है।

इन दिनों भारत की राजनीति में सफल होने के लिए गवर्नेंस का एक मॉडल पेश करने का चलन शुरू हो गया है। हालांकि ऐसा नहीं है कि विचारधारात्मक राजन. ीति खत्म हो गई, बल्कि विचारधारा पहले से ज्यादा अहम हो गई है। उत्तर प्रदेश में भाजपा की जीत इसका नमूना है। यह अलग बात है कि भाजपा के नेता खुल कर यह बात मानेंगे नहीं कि हिंदुत्व की विचारधारा और हिंदू कंसोलिडेशन से पार्टी जीती है। वे बुलडोजर और कानून-व्यवस्था की बात कर रहे हैं ले. किन ये दोनों चीजें भी हिंदुत्व की राजन. ीति के प्रतीक के तौर पर चुनाव में इस्तेमाल की गईं। इसी विचारधारा की राजनीति अरविंद केजरीवाल भी कर रहे हैं। इसके बावजूद भाजपा और आम आदमी पार्टी दोनों गवर्नेंस का एक मॉडल भी लोगों के सामने पेश करते हैं।

नरेंद्र मोदी प्रधानमंत्री पद के दावेदार के तौर पर 2013 में जब आम चुनाव में उतरे तब उन्होंने गुजरॉत मॉडल पेश किया। पूरे देश में गुजरात गाथा सुनाई गई और बताया गया कि कैसे बतौर मुख्यमंत्री मोदी ने गुजरात का कायाकल्प कर दिया। उसकी हकीकत लोग बाद में जाने तब तक कहानी आगे बढ़ चुकी थी और अब मोदी मॉडल पूरे देश में चल रहा है। इसको चुनौती देने के लिए केजरीवाल ने दिल्ली मॉडल पेश किया है। पंजाब में यह मॉडल दिखा कर उन्होंने चुनाव जीत लिया और अब गुजरात, हिमाचल प्रदेश में इसके प्रदर्शन की तैयारी है। यह मा. ॅडल मुफ्त सेवाएं और नकद पैसे देने का है। उधर मणिपुर के चुनाव में जदयू को छह सीटें मिलीं तो उसके नेताओं ने कहा कि न्याय के साथ विकास का नीतीश कुमार का बिहार मॉडल मणिपुर में चला है। तभी सवाल है कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी कौन सा मॉडल लोगों के सामने पेश करेंगी? उनकी राष्ट्रीय महत्वाकांक्षा हिलोरें मार रही हैं और वे दिल्ली, मुंबई की दौड़ लगा रही हैं। वे पश्चिम बंगाल में लगातार तीसरी बार चुनाव जीती हैं। जब तक लोकसभा का अगला चुनाव आएगा तब तक राज्य की सरकार में उनके 13 साल पूरे हो जाएंगे। सो, 13 साल सरकार चलाने के बाद वे राष्ट्रीय स्तर पर कौन सा मॉडल पेश करेंगी, जिससे बंगाल से बाहर के लोग उनकी ओर आकर्षित होंगे? बंगाल के लोग तो आकर्षित हो सकते हैं। क्योंकि ममता और उनके चुनावी रणनीतिकार प्रशांत किशोर बांग्ला अस्मिता का दांव खेलेंगे और लोगों के सामने पहले बंगाली प्रधानमंत्री की चमकदार उम्मीद पेश करेंगे। लेकिन यह दांव बंगाल से बाहर नहीं चलेगा। तभी सवाल है कि वे अपने शासन की किस खूबी को देश के लोगों के सामने पेश करेंगी?

यह सवाल सिर्फ इसलिए नहीं उठ रहा है कि ममता बनर्जी अगले चुनाव में विपक्ष का चेहरा बनने की कोशिश कर रही हैं, बल्कि इसलिए भी उठ रहा है क्योंकि राज्य में राजनीतिक हिंसा का बेहद विद्रूप चेहरा देश के सामने आ रहा है। बीरभूम जिले से रामपुरहाट में दो बच्चों सहित 10 लोगों को जिंदा जलाने की घटना ममता राज की प्रतिनिधि घटना की तरह आज देश के सामने है। तृणमूल कांग्रेस के एक स्थानीय नेता भादू शेख की हत्या का बदला लेने के लिए इस कार्रवाई को अंजाम दिया गया। लोगों को घरों में बंद कर आग लगा दी गई। यह भयावह घटना है। कानून के शासन वाले किसी राज्य में ऐसी घटना की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। ध्यान हटाने के लिए या नया नैरेटिव सेट करने के लिए भले यह बताया जाए कि मरने वाले सभी लोग मुस्लिम हैं या आपसी रंजिश की वजह से ऐसा हुआ या भाजपा जिम्मेदार है, लेकिन नंगी सचाई लोगों के सामने है। यह घटना इस बात का संकेत है बंगाल में कानून का राज नहीं है या लोगों के मन में कानून के शासन के प्रति कोई सम्मान नहीं है। सरकारों की पहली जिम्मेदारी कानून का शासन स्थापित करने की होती है, जिसमें ममता सरकार विफल दिख रही है।

ऐसा नहीं है कि दूसरे राज्यों में इस तरह की घटनाएं नहीं होती हैं या चुनावी रंजिश नहीं होती है या कानून व्यवस्था की समस्या नहीं होती है लेकिन किसी राज्य में राजनीतिक हिंसा की संस्कृति को सांस्थायिक रूप से स्थापित नहीं किया जाता है। पश्चिम बंगाल में हिंसा वहां की राजनीतिक संस्कृति का हिस्सा बन गई है। हर चुनाव से पहले और बाद में हिंसा होती है और बेकसूर लोग मारे जाते हैं। यह एक बड़ा मानवीय और सामाजिक संकट है लेकिन उससे ज्यादा लोकतंत्र के लिए खतरनाक है। कहां तो ममता बनर्जी लोकतंत्र की रक्षक बन कर देश में घूम रही हैं और कहां उनके राज में बंदूक की नली से लोकतंत्र के संचालित होने की ध ारणा बन रही है।

सहकारिता के रास्ते ग्रामीण भारत में विकास को बढ़ावा

वर्ष 1904 में भारत में पहला सहकारिता कानून लागू होने के बाद से भारतीय सहकारी संगठन अब तेज गति के बदल. ाव के लिए तैयार हैं। सहकारिता के क्षेत्र में नए प्रतिमानों और सहकारी संगठनों के लिए बजटीय आवंटन के साथ अलग से एक सहकारिता मंत्रालय की मौजूदगी के रूप में इसके बदलते स्वरूप के साथ विकास के लिए प्राथमिकता वाले क्षेत्र के रूप में भारत के सहकारिता आंदोलन में एक नए सिरे से रुचि बढ़ी है।

अलग-अलग समय पर, विशेष रूप से नौवीं पंचवर्षीय योजना (1997-2002) तक, बदलाव के साधन के रूप में इस्. तेमाल किए जाने वाले सहकारी मॉडल ने भारत की विकास योजना की सफलता में अहम योगदान दिया है। गरीबी उन्मूलन, खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, सामाजिक एकीकरण और रोजगार सृजन के लक्ष्यों को प्राप्त करने के क्रम में इसके अंतर्नि. हत लाभ हुए हैं। सहकारी क्षेत्र हमारी अर्थव्यवस्था के प्रमुख क्षेत्रों में से एक है, जिसकी ऋण और गैर- ऋण समितियों के विशाल नेटवर्क के माध्यम से ग्रामीण भारत में व्यापक पहुंच है। भारत की कुल 8.5 लाख सहकारी इकाइयों में से, लग. भग 20 प्रतिशत (1.77 लाख इकाइयां) ऋण संबंधी सहकारी समितियां हैं और शेष 80 प्रतिशत गैर-ऋण सहकारी समितियां हैं, जोकि लगभग नब्बे प्रतिशत गांवों को कवर करती हुई मत्स्य, डेयरी, उत्पादक, प्रसंस्करण, उपभोक्ता, औद्योगिक, विपणन, पर्यटन, अस्पताल, आवास, परिवहन, श्रम, खेती, सेवा, पशुधन, बहुउद्देश्यीय सहकारी समितियां आदि जैसी विविध गतिविधियों में शामिल हैं। सदस्यता के संदर्भ में अगर बात करें, तो लगभग दो सौ नब्बे मिलियन किसान सहकारी समितियों में नामांकित हैं। इनमें से 72 प्रतिशत किसान ऋण संबंधी सहकारी समितियों और 28 प्रतिशत किसान गैर- ऋण संबंध ी सहकारी समितियों से जुड़े हैं (एनसीयूआई, 2018)।

प्राथमिक कृषि सहकारी ऋण समितियां (पैक्स) देश की अल्पकालिक सहकारी ऋण संरचना (एसटीसीसीएस) से संबंधित निर्माण खंड हैं। भारतीय रिजर्व बैंक के अनुसार, 31 मार्च 2018 तक कुल 6,39,342 गांवों को कवर करते हुए 13. 2 करोड़ सदस्यों के साथ देश में कुल 95,238 पैक्स उपलब्ध थे। ये समितियां गांवों में किसानों और निम्न-आय वर्ग के लोगों की वित्तीय सहायता करके उनके वित्तीय सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

एक अच्छे नेटवर्क और पैक्स जैसे सं. स्थानों की जरूरत होने के बावजूद, पैक्स के माध्यम से धीमी गति से सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। अंतरराष्ट्रीय सहकारी गठबंध न (आईसीए) का कहना है कि सहकारी समितियां स्वयं सहायता, आत्म-जिम्मेदारी, लोकतंत्र, समानता, हिस्सेदारी और एकजुटता के मूल्यों पर आधारित होती हैं। अपने संस्थापकों की परंपरा में, सहकारी समितियों के सदस्य ईमानदारी, खुलेपन, सामाजिक जिम्मेदारी और दूसरों की देखभाल जैसे नैतिक मूल्यों में विश्वास करते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि सहकारिता के मूल सिद्धांत से समझौता किए जाने की वजह से वित्तीय और गैर-वित्तीय सेवाओं के वितरण में गिरावट आई है। ऋण चुकता करने के क्रम में अपर्याप्त धन संबंधी चूक, पेशेवर मानव संसाधनों की कमी और तकनीक के धीमे समावेश के परिणामस्वरूप प्रबंधन संबंधी सूचना की खराब प्रणाली, पारदर्शिता, आंतरिक नियंत्रण प्रणाली में शिथिलता, कदाचार की समस्याएं पैदा हुई है जिसके कारण विकास की प्रक्रिया में रुकावट आई है। एक बहुउद्देशीय समिति के रूप में पैक्स मेहता समिति (1937) ने बढ़ते संकट और असंतोष को दूर करने के लिए सहकारी ऋण समितियों को 'बहुउद्देश्यीय' सहकारी समितियों के रूप में पुनर्गठित करने की सिफारिश की थी। इसके अलावा, आजादी से पहले के काल में, सर मणिलाल नानावटी की अध्यक्षता वाली कृषि ऋण संगठन समिति ने सहकारी समितियों को एक व्यावहारिक व्यावसायिक इकाई बनाने के लिए कृषि वित्त में राज. कीय सहायता और सभी सहकारी ऋण समितियों को बहुउद्देश्यीय सहकारी समितियों में बदलने पर जोर दिया था और इस संबंध में सिफारिश की थी।

सहकारिता मंत्रालय ने पैक्स को सिर्फ एक ऋण समिति के बजाय एक ऐसी बहु-धंधी समिति के रूप में प्राथमिकता दी है जोकि ऋण एवं विभिन्न सेवाओं के लिए एकल खिडकी के रूप में कार्य कर सके। पुनरुद्धार की यह प्रक्रिया पैक्स को सेवा संगठनों के रूप में एक नई दिशा देने और कृषि विपणन, बागवानी, खाद्य तेल, उत्तर पूर्व क्षेत्र के लिए जैविक मूल्य श्रृंखला विकास, प्राकृतिक खेती आदि से संबंधित कृषि बजट 2022-23 की विभि. ान्न योजनाओं के साथ एकीकृत करने का भी आह्वान करती है। खरीद, भंडारण एवं वेयरहाउसिंग, प्रसंस्करण, ग्रामीण एवं कृषि संबंधी लॉजिस्टिक्स के प्रबंधन, बाजार संबंधी परामर्श एवं खुफिया जानकारी आदि जैसी गतिविधियों पर अमल कर पैक्स को बहुउद्देशीय समितियों के रूप में मजबूत किया जाएगा। हालांकि वर्तमान की बाजार एवं प्रौद्योगिकी संचालित अर्थव्यवस्था में सहकारी समितियों के प्रमुख सिद्धांतों के रूप में सदस्यों की आर्थिक भागीदारी और सहकारी समितियों के बीच परस्पर सहयोग की केंद्रीयता बनाए रखने की जरूरत है।

पैक्स का डिजिटलीकरण

पैक्स का डिजिटलीकरण प्रौद्योगिकी को अपनाने और व्यावसायिक दृष्टि से व्यवहारिक बनने की दिशा में एक महत्वपूर्ण रणनीतिक कदम है। केन्द्रीय बजट 2022-23 में प्राथमिक कृषि सहकारी समितियों के डिजिटलीकरण के लिए 350 करोड़ रुपये की राशि निर्धारित की गई है। सहकारिता मंत्रालय द्वारा 63000 पैक्स को कम्प्यूटरीकृत करने की योजना तैयार की गई है।

पैक्स का डिजिटलीकरण कृषि संबंधी कई पहलों के कार्यान्वयन में सहायता करेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि किसानों को डिजिटल समावेशिता के माध्यम से पारदर्शी तरीके से ऋण, उर्वरक और बीज प्राप्त हों। पैक्स में प्रौद्योगिकी और नवाचार के माध्यम से गुणवत्ता नियंत्रण किया जाना भी बेहद जरूरी है। सहकारिता के इस डिजिटल ब्रह्मांड में अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी और स्थायी रूप से प्रदर्शन करने के लिए पैक्स द्वारा अपनी कार्यप्रणाली में विविधता लाना, नवाचार करना, ज्ञान साझा करने में सहयोग करना और उभरती हुई तकनीक का उपयोग किया जाना बेहद जरूरी है। बिग डेटा, इंटरनेट ऑफ थिंग्स और ब्लॉकचेन तकनीक जैसे उद्योग 4.0 के विभिन्न पहलू वितरण संबंधी आपूर्ति श्रृंखला में दक्षता और विश्वास का समावेश करते हैं। मसालों, मत्स्यपालन, काजू और केसर, जोकि सहकारी समितियों के सदस्यों की अच्छी भागीदारी के साथ उच्च मूल्य वाले और निर्यात-उन्मुखी उत्पाद हैं, की आपूर्ति श्रृंखला में ब्लॉकचेन तकनीक का समावेश करने का यह सही समय है। पैक्स के सदस्यों के निरंतर प्रशिक्षण और कौशल विकास के माध्यम से डिजिटल साक्षरता को बढ़ाना समय की मांग है। पैक्स के डिजिटलीकरण के क्रम में वि. भन्न संस्थानों द्वारा केएपी (ज्ञान, दृष्टिकोण व्यवहार) को अपनाए जाने की जरूरत है जोकि प्रौद्योगिकी को अपनाने के साथ-साथ अपेक्षित परिणाम की दिशा में एक व्यवस्थित दृष्टिकोण का समावेश करेगा।

स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचा सकता है चुकंदर के जूस का अधिक सेवन, जानिए कितना पीना सही

चुकंदर पोटेशियम, जिंक, मैग्नीशियम, फॉस्फोरस, सल्फर, नियासिन और कई जरूरी विटामिन्स के साथ-साथ एंटी-ऑक्सीडेंट गुण से समृद्ध होते है, इसलिए इसके जूस का सेवन कई तरह से स्वास्थ्य के लिए लाभदायक साबित हो सकता है। हालांकि, अगर आप चुकंदर के जूस का सेवन अधिक मात्रा में करते हैं तो यह स्वास्थ्य को फायदे नहीं बल्कि नुकसान पहुंचाने का कारण बन सकता है। आइए जानते हैं कि चुकंदर के जूस के अधिक सेवन से कौन-कौन सी समस्याएं हो सकती हैं।

किडनी स्टोन की समस्या का करना पड़ सकता है सामना

किडनी शरीर के महत्वपूर्ण अंगों में से एक है, जो खून को साफ करके शरीर से जहरीले तत्वों को बाहर निकालने में मदद करती है। हालांकि, जब आप जरूरत से ज्यादा चुकंदर के जूस का सेवन करते हैं तो इससे आपकी किडनी पर बहुत अधिक दबाव पड़ता है, जिसके कारण किडनी अपना काम सही ढंग से नहीं कर पाती है, जिसके परिणामस्वरूप आपको किडनी स्टोन की समस्या का सामना करना पड़ सकता है।

गर्भवती महिला को पहुंचा सकता है नुकसान

चुकंदर में नाइट्रेट (केमिकल कंपाउंड) की मात्रा मौजूद होती है। ऐसे में अगर कोई गर्भवती महिलाएं अधिक चुकंदर का जूस पीती है तो शरीर में नाइट्रेट की मात्रा अधिक हो जाती है, जिसके कारण गर्भवती महिला को कई तरह की समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इसलिए, अगर कोई महिला गर्भवती है तो वह इसका सेवन बेहद कम मात्रा में करें। यही नहीं, स्तनपान कराने वाली महिलाओं को भी चुकंदर के जूस का सेवन सीमित मात्रा में करना चाहिए।

लिवर की बीमारियां होने का रहता है खतरा

चुकंदर के जूस का अधिक सेवन लिवर के स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है और इसे कमजोर कर सकता है। दरअसल, चुकंदर के जूस की अधिक मात्रा शरीर में पहुंचकर शरीर की तंत्रिकाओं और कोशिकाओं में सूजन पैदा कर सकती है, जिसकी वजह से लिवर कमजोर होने लगता है। वहीं, इसका अधिक सेवन कई तरह की लिवर संबंधित बीमारियों का कारण बन सकता है। इसलिए बेहतर होगा कि आप सीमित मात्रा में ही चुकंदर के जूस का सेवन करें।

हो सकती हैं पेट से जुड़ी समस्याएं

चुकंदर या फिर इससे बने जूस का अधिक

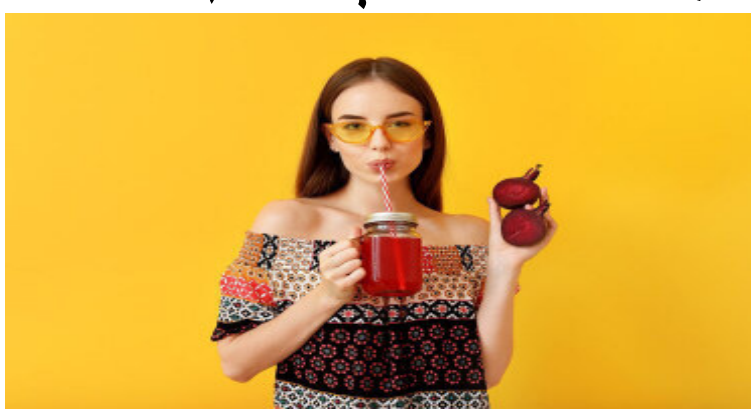

सेवन करने से आपको पेट से जुड़ी कई समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। बता दें कि ज्यादा चुकंदर का जूस पीने से एसिडिटी, मतली, उल्टी और पेट में दर्द जैसी कई तरह की समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। इसलिए सीमित मात्रा में ही इसका सेवन करें। बेहतर होगा कि आप डाइटीशियन की सलाह के अनुसार अपनी डाइट में चुकंदर के जूस को शामिल करें।चुकंदर का जूस कई ऐसे पोषक तत्वों से समृद्ध होता है, जो शरीर के साथ-साथ मानसिक स्वास्थ्य के लिए बहुत ही फायदेमंद होते हैं और न्यूट्रीशियनिस्ट की मानें तो एक दिन में 250 मि.ली. चुकंदर के जूस का सेवन करना ही लाभदायक है।

सैंडविच मेकर को आसानी से साफ करने के लिए अपनाएं ये तरीके

सैंडविच मेकर की मदद से स्टफ ब्रेड या फिर रोल आदि को ग्रील करने में काफी कम समय लगता है। हालांकि, जब बात इसकी सफाई की आती है तो कई लोगों को मुश्किल होती है क्योंकि यह एक बिजली से चलने वाला उपकरण है और गलत तरीके से सफाई से यह खराब हो सकता है। आइए आज हम आपको कुछ ऐसे तरीके बताते हैं जिन्हें आजमाकर आप सैंडविच मेकर को मिनटों में सुरक्षित तरीके से साफ कर सकते हैं।

सफाई करते समय जरूर बरतें ये सावधानियां

सैंडविच मेकर की सफाई करने से पहले इसका प्लग स्विच बोर्ड से निकाल दें ताकि किसी तरह के नुकसान से बचा जा सकें। इसके अलावा, सफाई की प्रक्रिया शुरू करने से पहले सैंडविच मेकर की प्लेट को थोड़ा ठंडा होने दें क्योंकि गर्म प्लेट पर रसायनों का इस्तेमाल करने से यह खराब हो सकता है। इसी के साथ सैंडविच मेकर की प्लेट को एक सूखे माइक्रोफाइबर कपड़े से पोंछ लें।

बेकिंग सोडा और सिरका आएगा काम

सैंडविच मेकर को साफ करने के लिए बेकिंग सोडा और सिरके के मिश्रण का इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके लिए पहले इन दोनों को एक कटोरी में मिलाकर गाढ़ा घोल बनाएं, फिर इस घोल को सैंडविच मेकर की गंदी जगह पर लगाकर 15 से 20 मिनट के लिए छोड़ दें। इसके बाद सैंडविच मेकर को पहले किसी गीले स्पंज से दो से तीन बार पोंछे, फिर अंत में इसे सूखे माइक्रोफाइबर कपड़े से पोंछे।

बेकिंग सोडा और गर्म पानी भी है कारगर

इस तरीके से भी सैंडविच मेकर को आसानी से साफ किया जा सकता है। इसके लिए एक मुलायम कपड़े को गर्म पानी में कुछ देर के लिए भिगोएं। इस बीच सैंडविच मेकर की सतह पर बेकिंग सोडा की अच्छी-खासी मात्रा छिडककर उसे 10-15 मिनट के लिए छोड़ दें। समय पूरा होने के बाद सैंडविच मेकर पर गर्म पानी से भिगे हुए कपड़े को हल्के हाथों से रगड़ें। इसके बाद किसी सूखे और साफ कपड़े से सैंडविच मेकर को पोंछे।

महत्वपूर्ण टिप्स

इन बातों का भी रखें ध्यान

भूल से भी सैंडविच मेकर को चलते पानी के नीचे रखकर साफ न करें क्योंकि इससे इसके हीटिंग एलिमेंट को नुकसान पहुंच सकता है। वहीं, जब आप सैंडविच मेकर में कुछ भी पकाएं तो इसके तुरंत बाद इसे साफ कर दें क्योंकि अगर आप देर करेंगे तो इसमें बनाई गई सामग्री के बचे हुए अवशेष सूख जाएंगे, जिनके कारण इसे साफ करना मुश्किल हो जाएगा। समय-समय पर सैंडविच मेकर की बाहरी सफाई पर भी ध्यान दें।

बालों के लिए फायदेमंद है सेब का सिरका, ऐसे अपने हेयर केयर रूटीन में करें शामिल

बालों को खूबसूरत बनाने की चाह में लोग न जाने कितने केमिकल्स युक्त प्रोडक्ट्स को अपने हेयर केयर रूटीन का हिस्सा बना लेते हैं, लेकिन इनसे बालों को नुकसान पहुंच सकता है। अगर आप अपने बालों को खूबसूरत और स्वस्थ बनाए रखना चाहते हैं तो इसके लिए सेब के सिरके का इस्तेमाल करना बेहतरीन है। आइए जानते हैं कि सेब के सिरके को किन तरीकों से हेयर केयर रूटीन में शामिल करके आप इसके भरपूर फायदे पा सकते हैं।

सेब के सिरके का हेयर सीरम बनाकर करें इस्तेमाल

इसके लिए एक ड्रॉपर वाली बोतल में एक चौथाई कप सेब का सिरका, दो बड़ी चम्मच नारियल का तेल, ढाई चम्मच गुलाब जल और एक चम्मच विटामिन-ई ऑयल डालें और बोतल को बंद करके अच्छी तरह से हिलाएं ताकि सारी सामग्रियां अच्छे से मिल जाएं। ऐसे सेब के सिरके का हेयर सीरम तैयार हो जाएगा। आप चाहें तो इसमें सुगंध लाने के लिए अपने पसंदीदा एसेंशियल ऑयल की कुछ बूंदें मिलाएं।

बतौर हेयर कंडीशनर करें इस्तेमाल

आप चाहें तो सेब के सिरके की मदद से नैचुरल हेयर कंडीशनर तैयार कर सकते हैं। बस इसके लिए आपको एक कटोरी में एक कप पानी के साथ दो बड़ी चम्मच सेब के सिरके को अच्छे से मिलाएं। इसके बाद इस मिश्रण से अपने बालों को धोकर शैंपू से धो लें। इसके बाद ठंडे पानी से एक बार फिर बाल धो लें। इस मिश्रण के इस्तेमाल से बाल नैचुरल तरीके से मजबूत और सिल्की होते हैं।

बालों को पोषित करने का कर सकता है काम

सेब के सिरके के हेयर मास्क से बालों को पोषित करने में काफी मदद मिल सकती है। अगर आपके बाल तैलीय प्रकार के हैं तो सेब के सिरके के साथ दही को मिलाकर इसे सिर पर अच्छे से लगाएं और लगभग 30 से 40 मिनट के बाद सिर को पानी से धो लें। वहीं, अगर आपके बाल रूखे प्रकार के हैं तो सेब के सिरके और बादाम के तेल का हेयर मास्क बनाकर उसका इस्तेमाल करें।

स्कैल्प के लिए है कारगर

सेब के सिरके के इस्तेमाल से न सिर्फ स्कैल्प के तैलीय प्रभाव को नियंत्रित करने में मदद मिल सकती है बल्कि इसके एंटी-सेप्टिक और रोगाणुरोधी गुण रूसी और स्कैल्प के दानों को भी कम कर सकते हैं। ये लाभ पाने के लिए एक कटोरी में एक चम्मच सेब का सिरका और दो चम्मच गुनगुना एक्स्ट्रा वर्जिन ऑलिव ऑयल या नारियल का तेल मिलाएं, फिर इसे अच्छे से बालों में लगाकर रातभर के लिए छोड़ दें।

स्वास्थ्य के लिए परेशानी का कारण बन सकता है गाजर का अधिक सेवन

गाजर कई तरह के विटामिन्स और मिनरल का बेहतरीन स्रोत हैं, जिस वजह से इसको स्वस्थ आहार की श्रेणी में शामिल किया जाता है। हो सकता है कि इसी वजह से आपकी डाइट में भी गाजर शामिल हो, लेकिन अगर आप इसका अधिक सेवन करते हैं तो यह आपके शरीर को कई तरह की समस्याओं से घेर सकता है। आइए जानते हैं कि गाजर के अधिक सेवन से आपको किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वैसे तो गाजर का सेवन त्वचा के लिए बहुत फायदेमंद है क्योंकि यह त्वचा को हाइड्रेट करने के साथ-साथ विटामिन- सी भी प्रदान करता है। हालांकि, अगर आप इसका अधिक सेवन करते हैं तो गाजर से त्वचा को फायदे की बजाय नुकसान पहुंच सकता है। बता दें कि गाजर के अधिक सेवन से त्वचा पर सूजन, खुजली और रैशेज आदि समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए गाजर का सेवन हमेशा सीमित मात्रा में ही करें।गाजर का अधिक सेवन पाचन तंत्र के स्वास्थ्य को भी प्रभावित कर सकता है क्योंकि पाचन तंत्र गाजर की अधिक मात्रा को सही ढंग से पचाने में असमर्थ रहता है। इसके कारण व्यक्ति को कब्ज की समस्या होने की अधिक संभावना रहती है। इसके अलावा, इसकी वजह से गैस और पेट दर्द जैसी कई तरह की समस्याओं से भी जूझना पड़ सकता है। इसलिए भूल से भी गाजर का अधिक सेवन न करें। गाजर बीटा-कैरोटीन से समृद्ध होती है, जिससे शरीर को कई लाभ मिल सकते हैं, लेकिन अगर आप गाजर का अधिक सेवन करते हैं तो शरीर में इसकी मात्रा भी बढ़ जाती है। इसके कारण त्वचा का रंग नारंगी दिखाई देने लगता है। बता दें कि एक मध्यमाकार गाजर में लगभग चार मिलीग्राम बीटा-कैरोटीन मौजूद होता है, इसलिए बेहतर होगा कि आप सीमित मात्रा में ही गाजर का सेवन करें। हो सकता है डायरिया गाजर में फाइबर की अच्छी खासी मात्रा मौजूद होती है, लेकिन जब आप इसका अधिक सेवन करते हैं तो शरीर में फाइबर भी ज्यादा हो जाता है, जिसके कारण आपको डायरिया की समस्या या फिर कई तरह अन्य पाचन संबंधित समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। वैसे ये समस्याएं किसी और वजह से भी हो सकती हैं, इसलिए ऐसा कुछ होने पर डॉक्टरी जांच को प्राथमिकता दें। वहीं, डाइट में सीमित मात्रा में गाजर को शामिल करें।

एसएसजे विश्वविद्यालय में पूर्व छात्र कला प्रदर्शनी का शुभारंभ

अल्मोड़ा। एसएसजे विश्वविद्यालय, अल्मोड़ा में मंगलवार को समाचार एवं विचार सम्मेलन और प्रथम पूर्व छात्र कला प्रदर्शनी का आयोजन हुआ। कार्यक्रम में देशभर से पचास से अधिक प्रतिनिधियों, प्रतिभागियों, कलाकारों और छात्रों ने भाग लिया। समारोह के मुख्य अतिथि कुलपति प्रोफेसर सतपाल सिंह बिष्ट ने कहा कि यह प्रदर्शनी विश्वविद्यालय के पूर्व छात्रों के रचनात्मक प्रयासों का परिणाम है। उन्होंने दृश्य कला विभाग और संकाय को इस पहल के लिए बधाई दी और कहा कि इस प्रदर्शनी से वर्तमान छात्र पूर्व छात्रों और विभिन्न कला विधाओं के विशेषज्ञों से सीख प्राप्त करेंगे। दृश्य कला संकाय के डीन प्रोफेसर शेखर चंद्र जोशी ने कहा कि कला का उद्गम प्रकृति और मानव के जन्म के साथ हुआ है। भारतीय कला हमारी सभ्यता जितनी ही प्राचीन है। उन्होंने कहा कि भीमबेटका की गुफा चित्रों से लेकर अजंता-एलोरा, खजुराहो, कोणार्क और जागेश्वर के मंदिरों तक, कला ने हमारी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखा है। कला केवल सौंदर्य का माध्यम नहीं, बल्कि यह मानवता, आध्यात्मिकता और समाज के विविध आयामों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है। आगरा की शिक्षाविद् डॉ. शुभदा पांडे और पटना की डॉ. राखी कुमार ने क्रमशः मिथिला कला और लोक कला पर अपने विचार रखे। उन्होंने ग्राफिक कला (छपा कला) के महत्व पर भी चर्चा की। इस दौरान मजखली ब्रेवरी प्राइवेट लिमिटेड के संस्थापक एवं सीईओ तथा पैबाईटू प्राइवेट लिमिटेड के सह-संस्थापक डॉ. शेकर बोरुआ द्वारा निर्मित दो मिनट की लघु फिल्म शहिमालय बचाओश प्रदर्शित की गई। उन्होंने उपस्थित दर्शकों से अपील की कि वे कचरा फैलाकर हिमालय को नुकसान न पहुँचाएँ। सत्र की अध्यक्षता परिसर निदेशक प्रोफेसर प्रवीण बिष्ट ने की। उन्होंने कहा कि यह सम्मेलन और प्रदर्शनी छात्रों में नए विचारों को प्रेरित करेगी और उनकी रचनात्मकता को बढ़ावा देगी। उद्घाटन सत्र का संचालन प्रोफेसर संजीव आर्य ने किया और धन्यवाद ज्ञापन भी दिया। इस अवसर पर प्राची नेगी, हर्षिता नेगी, आंचल आर्य, भावना शर्मा, दिव्या सामंत, दिव्या बिष्ट, निशा चौहान, लता भंडारी, स्नेहा रौतेला और अंजलि आर्य द्वारा तैयार ऐपण प्रतिनिधियों और अतिथियों को भेंट किया गया।

राज्यपाल करेंगे 118वें अखिल भारतीय किसान मेले का शुभारंभ

रुद्रपुर। जीबी पंत कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय में 10 से 13 अक्तूबर तक आयोजित होने वाले 118वें अखिल भारतीय किसान मेला एवं कृषि उद्योग प्रदर्शनी का शुभारंभ राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल गुरमीत सिंह (सेनि.) करेंगे। इस दौरान जिला प्रभारी एवं कृषि मंत्री गणेश जोशी विशेष अतिथि के रूप में उपस्थित रहेंगे। उद्घाटन समारोह गांधी हॉल में आयोजित होगा, जिसके पश्चात अतिथि मेला प्रांगण का भ्रमण करेंगे और किसानों को संबोधित करेंगे। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. मनमोहन सिंह चौहान ने मंगलवार को प्रेस कॉन्फ्रेंस में बताया कि इस वर्ष मेले का मुख्य आकर्षण स्मार्ट और डिजिटल कृषि पर आधारित विद्यार्थियों के नवाचार एवं स्टार्टअप मॉडल होंगे। इससे छात्र उद्यमिता और रोजगार सृजन की दिशा में प्रेरित होंगे। उन्होंने बताया कि मेले में विश्वविद्यालय द्वारा विकसित नई फसलों की प्रजातियां, कृषि यंत्र, पशु उत्पाद और प्रसंस्कृत खाद्य सामग्री प्रदर्शित की जाएंगी। साथ ही मशरूम चाय और 'श्रीअन्न से बने उत्पाद विशेष आकर्षण रहेंगे। मेले में देशभर से 200 से अधिक बड़े स्टॉलधारक और कई छोटे उद्यमी भाग लेंगे। यहां कृषि यंत्र, बीज, उर्वरक, औषधीय पौधे, हस्तकला, सौर ऊर्जा उपकरण और प्रसंस्कृत खाद्य उत्पादों की प्रदर्शनी एवं बिक्री होगी। संयुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा डॉ. संजय चौधरी ने बताया कि विभिन्न बैंक, शोध संस्थान और सरकारी विभाग भी मेले में अपनी योजनाओं और उपलब्धियों की जानकारी किसानों तक पहुंचाएंगे।

मारपीट के दो दोषियों को सदाचार पर रहने का आदेश

रुद्रप्रयाग। जनपद में खांकरा स्थित मैक्स इंफ्रा इंडिया प्राइवेट लिमिटेड कंपनी में हुई मारपीट के मामले में न्यायालय ने दो अभियुक्तों को दोषी ठहराते हुए एक वर्ष की अवधि तक सदाचार पर रहने का आदेश दिया है। मामले में राज्य सरकार की ओर से अभियोजन अधिकारी प्रमोद चन्द्र आर्य ने प्रभावी पैरवी की। घटनाक्रम के अनुसार मैक्स इंफ्रा इंडिया प्रालि के जनरल मैनेजर राजेश कुमार द्वारा पूर्व में कोतवाली रुद्रप्रयाग में तहरीर दी थी कि अभियुक्त अंकित असवाल और आशीष पंवार कंपनी की साइट पर पहुंचे और कर्मचारियों से बहसबाजी करने लगे। जब मैनेजर ने उन्हें समझाने का प्रयास किया तो दोनों ने उनके साथ गाली-गलौज और मारपीट की, जिससे उन्हें चोटें आईं।पुलिस ने मुकदमा दर्ज करते हुए मामले की विवेचना की और बाद में आरोप पत्र न्यायालय में प्रेषित किया। विचारण के बाद मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट अशोक कुमार सैनी की न्यायालय ने अभियुक्त अंकित असवाल व आशीष पंवार को दोषसिद्ध ठहराया। न्यायालय ने दोनों को अपराधी परिवीक्षा अधिनियम 1958 की धारा 4 में एक वर्ष तक सदाचार पर रहने का आदेश सुनाया। इस मामले में राज्य सरकार की ओर से प्रभावी पैरवी अभियोजन अधिकारी प्रमोद चन्द्र आर्य द्वारा की गई।

अंजनीसैंण में हुई चंद्रा फीचर फिल्म की शूटिंग शुरू

नई टिहरी। जनपद के अंजनी सैण में केपीजी फिलम्स प्रोडक्शन के बैनर तले बन रही फीचर फिल्म चन्द्रा का शुभारंभ हुआ। यहां पर फिल्म के मुहुर्त शाट की क्लैप देते हुए टिहरी के पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष व ब्लाक प्रमुख जाखणीधार राजेश नौटियाल फिल्मांकन की शुरूआत की। इस मौके पर बतौर मुख्य अतिथि राजेश नौटियाल ने कहा कि टिहरी के सुरम्य वादियों में हो रही फिल्म की शूटिंग से जहां क्षेत्र को पहचान मिलेगी, वहीं क्षेत्रों में इस तहर की शूटिंग से युवाओं को रोजगार के साधन भी उपलब्ध होंगे। फिल्म की कहानी उत्तराखण्ड की पौराणिक व ऐक विशेष पहलू पर है। लगभग एक महीने तक टिहरी जनपद और चमोली जनपद के अलग-अलग हिस्सों में इस फिल्म की शूटिंग होगी। इसके संगीतकार संजय कुमोला हैं। गायकों में मीना राणा, सौरभ मैठाणी, सुशील राजश्री, कैलाश कुमार, प्रतीक्षा बमराडा, रेनू बाला, अंजलि खरे ने अपने मुधर स्वर दिये हैं। इस मौके पर ग्राम प्रधान राकेश थपलियाल, समाजसेवी सुनील उपाध्याय , सदस्य क्षेत्र पंचायत साब सिंह रावत, भाजपा मंडल अध्यक्ष संजय तड़ियाल, जिला मंत्री भाजपा सोहन चौहान, पंडित राम स्वरूप आदि ने फिल्म की शूटिंग अवसर पर सहयोग दिया। जबकि इस मौके पर फिल्म के निर्देशक कांता प्रसाद, फिल्म के लाइन प्रोड्यूसर कुलदीप असवाल, फिल्म के कहानीकार भगवती प्रसाद उपाध्याय, निर्माता अर्जुन असवाल, फिल्म की मुख्य भूमिकाओं के कलाकारों में मिनी उनियाल, सुशील पुरोहित, अनुष्का पंवार, सुनील सिंह, अंकित रौथान, आस्था रावत, मोहित थपलियाल, सुषमा व्यास, इंदु रावत, जसपाल राणा,अनुज हित, प्रकाश पाण्डेय, आस्था, पार्थ कोटियाल, शशांक पाण्डेय, अक्षित, डीओपी नागेंद्र प्रसाद, नितेश, अमित, रविन्द्र चाहत, अमित आदि मौजूद रहे।

बारिश बनी आफत, श्यामपुर क्षेत्र में धान की फसल चौपट

हरिद्वार। सोमवार शाम से तेज हवा के साथ आई झमाझम बारिश ने किसानों की मेहनत पर पानी फेर दिया। श्यामपुर, कांगड़ी, गाजी वाली, सजनपुर और आसपास के इलाके में खेतों में कटाई के लिए तैयार धान की फसल तेज हवा और बारिश के कारण गिर गई। खेतों में पानी घुसने से फसल मिट्टी में दब गई और किसानों की उम्मीदें टूट गईं। श्यामपुर क्षेत्र के रामचरण सिंह ने कहा पूरे साल पसीना बहाया, उम्मीद थी कि इस बार फसल अच्छी निकलेगी लेकिन तेज हवा और बारिश ने सब कुछ बहा दिया। खेत में अब न फसल बची है, न हिम्मत। धर्मपाल सिंह ने बताया कि कटाई के बाद खेत में रखी धान पूरी तरह भीग गई। न सिर्फ अभी की फसल बर्बाद हुई है, बल्कि आने वाली गेहूं की बुवाई के लिए जरूरी पैसा जुटाना भी अब बड़ी चुनौती बन गया है। इस बारिश ने हमारी सारी उम्मीदें तोड़ दी हैं।

शरदकालीन क्रीड़ा प्रतियोगिता में पौड़ी बना ओवरऑल चौंपियन

पौड़ी(आरएनएस)। जिला मुख्यालय पौड़ी के रांसी स्टेडियम में माध्यमिक शिक्षा की चार दिवसीय 75वीं जनपद स्तरीय शरदकालीन क्रीड़ा प्रतियोगिता में विकास खंड पौड़ी ओवरऑल चौंपियन बना। प्रतियोगिता में विकास खंड दुगड्डा ने दूसरा और एकेश्वर ने तीसरा स्थान हासिल किया। वॉलीबाल प्रतियोगिता के बालक सीनियर व जूनियर वर्ग में नैनीडांडा ब्लाक विजेता बना। मंगलवार को रांसी स्टेडियम में आयोजित प्रतियोगिता के अंतिम दिवस पर मुख्य अतिथि व्यापार संघ अध्यक्ष विनय शर्मा रहे। उन्होंने प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों को मेडल प्रदान किए। समापन पर ओवरऑल चौंपियनपियन को ट्राफी प्रदान कर सम्मानित किया। इस दौरान वॉलीबाल, कबड्डी, खो-खो, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, क्रिकेट, बास्केटबॉल, जूडो और योग प्रतियोगिताओं में खिलाड़ियों ने उत्तम प्रदर्शन किया। प्रतियोगिता के समापन दिवस पर वॉलीबाल प्रतियोगिता के सीनियर बालक वर्ग में नैनीडांडा विजेता, थलीसैंण उपविजेता बना। जूनियर बालक वर्ग वॉलीबाल में भी नैनीडांडा विजेता व रिखणीखाल उपविजेता रहा। बैडमिंटन जूनियर बालिका वर्ग में पौड़ी की प्राची प्रथम, खुशी द्वितीय, रिखणीखाल की अंशिका तृतीय स्थान पर रही। सब जूनियर बालिका वर्ग बैडमिंटन में एकेश्वर की अक्षिता पहले, कोट ब्लाक की राधिका दूसरे व हंसिका तीसरे स्थान पर रहे। सीनियर बालक वर्ग बैडमिंटन में जीत डोभाल प्रथम, ललित सिंह कोरंगा द्वितीय व सोनू तृतीय, जूनियर बैडमिंटन बालक वर्ग में विश्वजीत मंडल प्रथम, कुलभूषण द्वितीय, रमेश चंद्र सिंह तृतीय स्थान पर रहे । जबकि सब जूनियर बालक वर्ग में सत्यम दास ने पहला, सोमेश ने दूसरा व यश ने तीसरा स्थान पाया। प्रतियोगिता में विकास खंड पौड़ी ओवरऑल चौंपियन रहा। विकास खंड दुगड्डा द्वितीय व एकेश्वर तृतीय स्थान पर रहा।

पार्टी को मजबूत करने पर दिया जोर

पौड़ी। राष्ट्रपति पुलिस पदक से सम्मानित, रैबासी कल्याण संस्था के संस्थापक एवं निदेशक और कोट ब्लाक के बालमणा गांव निवासी सेनि असिस्टेंट कमांडेंट रवींद्र प्रसाद जुयाल ने हिमालय क्रांति पार्टी का दामन थाम लिया है। कहा कि वह में अपनी पूरी क्षमता, अनुभव और समय को जनसेवा, संगठन विस्तार और नीति-निर्माण में समर्पित करूंगा। इस दौरान सभी ने पार्टी को मजबूत करने पर जोर दिया। मंगलवार को पार्टी कार्यालय में अपने समर्थकों के साथ पहुंचकर उन्होंने पार्टी के केंद्रीय और प्रांतीय नेतृत्व का आभार व्यक्त किया। कहा कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि हम सबके सामूहिक प्रयास, निष्ठा और पारदर्शी नेतृत्व से उत्तराखंड को राष्ट्र निर्माण में अग्रणी राज्य बनाने का स्वप्न अवश्य साकार होगा। इससे पूर्व जिला कार्यालय पहुंचने पर प्रदेश महासचिव दिनेश सिंह बिष्ट ने रवींद्र प्रसाद जुयाल व उनके समर्थकों का माल्यार्पण कर स्वागत किया। कहा कि ऐसे बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी व्यक्ति के पार्टी में जुड़ने से उत्तराखंड जैसे सैनिक बाहुल्य क्षेत्र में निश्चित रूप से सैनिकों, पूर्व सैनिकों में पार्टी के प्रति रुझान बढ़ेगा। जिला महासचिव पपेंद्र सिंह रावत ने कहा कि रवींद्र जुयाल के पार्टी में आने से अब सामान्य कार्यकर्ताओं का उत्साह भी बढ़ रहा है और आम आदमी हिमालय क्रांति पार्टी में जुड़ने को

स्वामी/प्रकाशक/मुद्रक/सम्पादक **गार्गी मिश्रा** द्वारा इंटर ग्राफिक आफॅसेट प्रिंटर्श 64 नेशविला रोड़ देहरादून, उत्तराखंड से मुद्रित, 98, 2-फ्लोर, सनशाइन अपार्टमेन्ट, नागल हटनाला, कुल्हान, सहस्त्रधारा रोड, देहरादून - 248001 से प्रकाशित।

सम्पादकः
गार्गी मिश्रा
8765441328

समस्त विवाद देहरादून न्यायालय के अधीन होंगे।